प्रश्न संख्या (हाशिये के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करें)

(1)

1 | 1

सुकरात ने ज्ञान को नैतिकता कहा कहा है। जिसने नैतिक अनैतिक सत्य-असत्य में भेद किया उस ज्ञान।

1 | 2

तुलसीदास की सामाजिक चेतना में गरीब, शोषित व्यक्ति व नारी थी।

1 | 3/4

सीदवीदना :- छवि से बनी हुयी सही प्रतीत होती हुयी मान सिकता।

पूर्वाग्रह ; किसी व्यक्ति के अन्य के प्रति बनी हुयी अभिवृत्ति।

1 | 5

स्वजागरूकता - अपनी भावनाओं को जानना।

समानुभूति :- दूसरो की भावनाओं को जानना व समझना।

1 | 6

प्रशासनिक अधिकारी के मन की समस्त भावनाओं का आपस में सुसंगत होना व उसका व्यवहार में सुसंगत होना।

1 | 7

I. मानवीय नैतिक मूल्य :- उदाहरण के लिए ईमानदारी, निष्पक्ष

II. अंतरात्मा -

(हाशिये के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करे)

प्रश्न संख्या	
1 8	किसी कर्म को करते हुए नैतिक दुविधा की स्थिति में एक या एक से अधिक अवांछनीय विकल्प, नैतिक विकल्प कहलाते हैं
1 9	राष्ट्रसंघ के तत्कालीन प्रमुख कोफी अन्नान द्वारा वर्ष 2003 में भ्रष्टाचार पर राष्ट्रसंघ की घोषणा की गयी थी
1 10	भ्रष्टाचार में नियंत्रण हेतु केन्द्र में प्रमुख पद लोकपाल व राज्य में प्रमुख पद लोकायुक्त है।
1 11	वेदान्त, उपनिषदों की आधुनिक समय में की गयी व्याख्या नव वेदान्त कहलाती है। उदाहरण : डॉ. राधाकृष्णन का चिंतन
1 12	जहाँ आत्मा व परमात्मा पृथक-पृथक न होकर एक ही हो, और उसे मानव के कल्याणार्थ परिभाषित किया गया है
1 13	जब व्यक्ति बौद्धिक विचार, भावना आदि से अलग हो किन्तु, और व्यवहार में भिन्नता हो, बौद्धिक पाखण्ड कहलाते हैं

प्रश्न संख्या	(हाशिये के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करे)
1 14	व्यक्तियों में आनुवंशिक, बौद्धिक स्तर, आयु, पर्यावरणीय, लिंग के आधार पर भिन्नताएँ हो, उसे व्यक्तिगत भिन्नताएँ कहते हैं
1 15	किसी वंचित वर्ग के प्रति कार्य करने की तीव्रता व सेवा भावना करुणा है।
1 16	जब व्यक्ति के मन में बार-बार करुणा का भाव आता है, तब एक समय के बाद इसकी तीव्रता में धीरे-धीरे कमी आती है
1 17	शासन-प्रशासन में व्यक्ति के विचारों और कार्य करने की शैली को कार्य संस्कृति कहते हैं।
1 18	भ्रष्टाचार पर राष्ट्रसंघ की घोषणा वर्ष 2003 में जारी की गयी थी
1 19	सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 किसी व्यक्ति द्वारा किसी शासकीय तंत्र से सूचना प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है।

प्रश्न संख्या	(हाशिये के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करें)

(4)

1 20 ट्रांसपैरेंसी इन्टरनेशनल द्वारा जारी सूचकांक। क्रम में भारत का स्थान - 86 वां।

प्रश्न संख्या	(हाशिये के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करें)

(5)

2 1 **पूर्वाग्रह** :- जब किसी व्यक्ति के मन में किसी अन्य के प्रति उसकी भाषा, धर्म, जाति, लिंग आदि के कारण धारणा बन जाती है उसे पूर्वाग्रह कहते हैं।

उदाहरण के लिए :- बड़े शहर में रहने वाले व्यक्ति छोटे शहर के व्यक्तियों को मूर्ख समझते हैं।

रूढ़िवादिता :- जब कोई धारणा व्यक्ति के मन में पूर्व समय से ही दृढ़ विश्वास की तरह रह जाती है, जो कि उसके लिए पूर्णरूप से नैतिक व सत्य होती प्रतीत होती है, रूढ़िवादिता कहलाती है।

2 2 **नैतिक दुविधा** - किसी व्यक्ति द्वारा निर्णय करते समय उपलब्ध दो या अधिक विकल्पों में से एक विकल्प नैतिक हो, तब नैतिक दुविधा की स्थिति बनती है।

नैतिक दुविधा की स्थिति में समाधान के लिए तरीके निम्न हैं:-

→ अपनी प्रबुद्ध अंतरात्मा के निर्णय पर विचार करना।

→ अपने वरिष्ठ अधिकारियों से विचार - विमर्श करना।

→ यदि संशय युक्त अंतरात्मा है, तो जानकारी एकत्र कर संशय को दूर करना।

→ नैतिक दुविधा में सोपानक्रम में उच्च मूल्यों को वरीयता देकर निर्णय की कोशिश करना।

23 सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार की रोकथाम के निम्न लिखित उपाय हो सकते हैं:

↳ नागरिक व समाज को उनके अधिकारों जैसे सूचना का अधिकार, नागरिक घोषणा पत्र आदि के प्रति जागरूक करना।

↳ मीडिया की भूमिका को सशक्त बनाना ताकि भ्रष्टाचार की जानकारी व रोकथाम पर जानकारी सही समय पर मिलती रहे।

↳ केन्द्रीय सतर्कता आयोग, केन्द्रीय सूचना ब्यूरो जैसी संस्थाओं को राजनैतिक नियंत्रण से मुक्त रखना।

↳ भ्रष्टाचार को कम करने करने के लिए पारदर्शिता को बढ़ावा देना।

24 सुशासन में 2

गौतम आईएएस एकेडमी | Meet us@Near Samadhan Hospital, Wright Town, Jabalpur (M.P.), Call : 0761 - 4031947, 9300030305

25 सावित्री बाई फूले भारत की पहली महिला शिक्षिका थी उनसे मिलने वाली शिक्षाएँ निम्नप्रकार है:-

- प्रत्येक महिला को शिक्षा का अधिकार है।
- सही कार्य को करते समय डरना नहीं चाहिए।
- उन्होंने विधवा विवाह पर बहुत योगदान दिया।
- उन्होंने जाति प्रथा का घोर विरोध किया, आज के समय में जाति प्रथा एक गंभीर समस्या है उनसे हमें जाति प्रथा पर से दूर रहने की भावना सीखनी चाहिए।
- बाल विवाह का उन्होंने विरोध किया, जिसे वर्तमान में समाज से दूर करने की आवश्यकता है।

26 मनोवृत्ति :- किसी व्यक्ति में किसी मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति संज्ञानात्मक, भावनात्मक, व क्रिया करने की तीव्रता मनोवृत्ति कहलाती है।

अवांछनीय मनोवृत्ति से वांछनीय मनोवृत्ति में परिवर्तन के निम्न लिखित तरीके हो सकते हैं:-

– आवश्यक सूचनाऐं प्रदान करना।

– जिसके प्रति मनोवृत्ति परिवर्तन करना है उससे व्यक्तिगत संपर्क कराया जाए।

– प्रत्यक्ष संपर्क मनोवृत्ति परिवर्तन का अच्छा उपाय है।

– यदि प्रबोधन (Persuation) करने वाला व्यक्ति प्रभावशाली व्यक्ति हो तो उसका प्रभाव अधिक पड़ता है। उदा:- डॉ. द्वारा धूम्रपान का विज्ञापन देना

गौतम आईएएस एकेडमी | Meet us@Near Samadhan Hospital, Wright Town, Jabalpur (M.P.), Call : 0761 - 4031947, 9300030305

2 1 प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डेनियल गोलमैन के अनुसार

संवेगिक बुद्धिमत्ता के घटक

स्वयं के संबंध में
- स्वजागरूकता
- स्वनियमन
- स्वनियंत्रण

अन्य के संबंध में
- समानुभूति
- सामाजिक स्किल

संवेगिक बुद्धिमत्ता को सीखा जा सकता है:- गोलमैन के अनुसार - CREEO तकनीक से इसे सीखा जा सकता है।

2 2 मूल्यों के विकास में परिवार की भूमिका सर्वप्रथम आती है। परिवार बच्चों की पहली पाठशाला है।

* परिवार की भूमिका :- परिवार में यदि व्यक्ति भ्रष्टाचारी है, उपभोक्तावादी है, तो निश्चय ही बच्चे भी उसी प्रवृत्ति के होंगे।

* समाज की भूमिका :- समाज व्यक्ति से जिस तरह की उम्मीद करता है, उस तरह उसके मूल्य विकसित होते है।

* शिक्षण संस्थान यदि जातिवाद सिखाते है तो व्यक्ति के उसी तरह के मूल्य विकसित होंगे।

3 1 चार्वाक दर्शन :- भारतीय दर्शन में चार्वाक दर्शन एक मात्र भौतिकवादी दर्शन है, जोकि सुखवाद पर जोर देता है।

चार्वाकों का सुखवाद :- यहाँ सुखवाद से तात्पर्य भौतिक सुख से है। चार्वाकों ने केवल शारीरिक सुख, भोग विलास को महत्व दिया। इसके लिए उन्होंने कहा है:-

"यावत् जीवेत सुखम् जीवेत, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत।
भस्मी भूतस्य देहस्य, पुनः आगमनं ना कुतः॥"

अर्थात जब तक जियो सुख से जियो, ऋण लेकर घी पियो, ये शरीर एक बार भस्म हो जाने पर पुनः वापस नहीं आता।

पुरुषार्थ के प्रति धारणा :- उन्होंने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ को व्यर्थ बताया है, जबकि केवल 'काम' को महत्व दिया।

"पीत्वा, पीत्वा पुनः पीत्वा, यावत् पतति भूतले।"

चार्वाक
- सुशिक्षित चार्वाक
- धूर्त चार्वाक

सुशिक्षित चार्वाक :- इन्होंने सुखवाद में मात्रात्मक भिन्नता के साथ गुणात्मक भिन्नता भी मानी है।

उदाहरण :- किसी व्यक्ति को किसी की सेवा करने में जो सुख मिलता है, वह अन्य व्यक्ति जिसे अच्छा भोजन करने में प्राप्त सुख मिलता है, से बड़ा है।

धूर्त चार्वाक :- इन्होंने सुखवाद में केवल मात्रात्मक भिन्नता को महत्व दिया है।

उदाहरण :- उनके लिए दूसरों की सेवा करने का सुख और अच्छा खाना खाने का सुख एक समान है।

मूल्यांकन में सकारात्मक पक्ष :- ये केवल वर्तमान में जीते हैं भूत या भविष्य के लिए चिंतित नहीं होते

→ व्यक्ति को सहज रूप में स्वीकार करते हैं, यदि प्रकृति ने मनुष्य को ऐसा बनाया है तो उसमें परेशान नहीं होना चाहिए।

नकारात्मक पक्ष :- धर्म, अर्थ मोक्ष की तुलना में 'काम' का अत्यधिक महिमामंडन किया है।

→ मनुष्य स्वाभाविक रूप से भविष्य के लिए सुरक्षात्मक उपाय करेगा।

→ हर तरह के सुख को समान रूप से देखा है।

3 2

मनोवृत्ति :- किसी मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति संज्ञानात्मक भावनात्मक व व्यवहारात्मक (क्रिया करने की तत्परता) अभिव्यक्ति को मनोवृत्ति कहते हैं।

यह सकारात्मक या नकारात्मक या दोनों हो सकती है।

मनोवृत्ति के घटक

- संज्ञानात्मक
- भावात्मक
- व्यवहारात्मक

संज्ञानात्मक घटक :- जब किसी मनोवैज्ञानिक विषय (विचार, भावना) के प्रति कोई संज्ञान या जानकारी हो, तब उसे संज्ञानात्मक घटक कहते हैं।

उदाहरण :- किसी राज्य के प्रति अन्य राज्य के व्यक्ति का यह जानना (चाहे वह सही न भी हो) कि वे अत्यधिक मांसाहारी हैं।

भावात्मक घटक :- उस संज्ञान के प्रति उसके मन में कोई भाव आए। जैसे अश्वेतों के प्रति अमेरिका में श्वेतों के मन में घृणा, गुस्सा का भाव आए।

व्यवहारात्मक घटक :- जो संज्ञान आया, जैसा भाव आए उसके अनुकूल व्यवहार करे। जैसे श्वेत लोग,

अश्वेतों को देखकर डर जाएं, वहाँ से दूर चले जाएं।
इस मॉडल को संक्षेप में 'संभाव्य' मॉडल कहा गया।

इस प्रकार उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि अमेरिका में श्वेत व्यक्तियों के मन में अश्वेतों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति है।

यदि किसी व्यक्ति के मन में किसी विषय के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति है जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए तब मनोवृत्ति में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। कि मनोवृत्ति अधिकांशतः सीखी जाती है, किसी खास खाद्य पदार्थ के प्रति जन्मजात हो सकती है किन्तु बहुत सीमित मात्रा में ही जन्मजात होगी।
मनोवृत्ति में परिवर्तन के निम्न लिखित उपाय हो सकते हैं:

* अत्यधिक मात्रा में सकारात्मक व तार्किक सूचनाएँ प्रदान करना।
* यदि किसी व्यक्ति के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति है तब उसके साथ सहयोगी संपर्क स्थापित से मनोवृत्ति में परिवर्तन लाया जा सकता है।
* मनोवृत्ति को परिवर्तित करने के सार्थक उपाय प्रेरणात्मक संप्रेषण (Persuation) होता है।

प्रशासन में यदि वंचित वर्ग के प्रति किसी के मन में नकारात्मक अभिवृत्ति है तो उसे बदला जा सकता, बदला जा सकता है विभिन्न उपायों।

2 3

सत्यनिष्ठा :- किसी व्यक्ति द्वारा मन, वचन, कर्म से अपनी भावनाओं, विचारों का सुसंगत रूप से पालन करना सत्यनिष्ठा कहलाती है।

सत्यनिष्ठा का प्रयोग सकारात्मक रूप में करते हैं जैसे अपने ऑफिस समय में केवल अपने ऑफिस कार्यों का ही पूरे मन से करना, कार्य पूरा न होने पर अतिरिक्त समय देकर भी कार्य को पूरा करना सत्यनिष्ठा है, जबकि अपने ऑफिस समय में ऑफिस में ही रहना, किन्तु अपने कार्य को विशेष महत्व न देना ईमानदारी बेईमानी नहीं होगी।

सत्यनिष्ठा के मार्ग में बाधाएं बहुत आती हैं, क्योंकि किसी एक व्यक्ति की सत्यनिष्ठा से अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता खतरे में आने लगती है। इससे व्यक्ति के समक्ष निम्न लिखित चुनौतियाँ आ सकती हैं।

* पारिवारिक दबाव :- यदि व्यक्ति सत्यनिष्ठ है और परिवार उपभोक्तावादी है तो व्यक्ति पर भ्रष्टाचार के लिए दबाव बनाएगा।

* जान को खतरा :- कई बार सत्यनिष्ठ होने पर व्यक्ति के शत्रुओं की संख्या बढ़ जाती

प्रश्न संख्या (हाशिये के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करें) (15)

है जिससे उसकी जान को खतरा हो सकता है।

प्रशासनिक दबाव - व्यक्ति के वरिष्ठ यदि भ्रष्ट हैं तब वे उस पर भी भ्रष्ट होने के लिए अनावश्यक दबाव बनाते हैं क्योंकि वे सत्यनिष्ठ व्यक्ति की वजह से भ्रष्ट तरीके का प्रयोग कर धन नहीं कमा पा रहे होते हैं।

उपरोक्त चुनौतियों के बावजूद व्यक्ति यदि सत्यनिष्ठ है तब वह आत्मसंतुष्टि प्राप्त करता है उसके साथ ही समाज में उसकी साख व विश्वसनीयता बढ़ती है। शासन - प्रशासन में व्यक्ति का स्वच्छ समाज के लिए सत्यनिष्ठ होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न संख्या (हाशिये के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करें) (16)

अहम भूमिका निभाती है।

भ्रष्टाचार का समाज में निश्चित ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जो कि निम्नानुसार है:

* नैतिक मूल्यों का पतन - एक व्यक्ति के भ्रष्ट होने से उसके पूरे परिवार के नैतिक मूल्य खतरे में पड़ जाते हैं।
* आर्थिक असमानता - भ्रष्टाचार से अमीर व्यक्ति और अमीर व गरीब व्यक्ति और गरीब होते जाते हैं।
* राष्ट्रीय विकास में बाधा होती है। देश विकास में पीछे हो जाता है।
* शासकीय संपत्ति का दुरुपयोग होता है।
* कार्यों को निष्पादन की प्रवीणता ढीली हो जाती है।
* कार्यों की गुणवत्ता में कमी आती है।

भ्रष्टाचार हमारे समाज को दीमक की तरह खा रहा है उसे हटाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ट्रांसपेरेन्सी इंटरनेशनल जैसे संगठन, जबकि देश में CVC, CBI जैसी संस्था है फिर भी नागरिक को स्वयं जागरूक होना पड़ेगा अपने अधिकारों (RTI, नागरिक घोषणापत्र) के प्रति सजग रहना पड़ेगा।

नाम प्रश्न :

(i) क्योंकि मैं इस विद्यालय में प्रधानाचार्य हूँ और मेरा [illegible] भी इसी स्कूल में [illegible] का छात्र है, और यह प्रश्न निश्चित [illegible] है -

- मैं यह नकल करने दूँ, जैसा कि मेरी पत्नी ने सुझाव दिया है क्योंकि वह गणित में कमजोर है और यदि वह फेल हो गया तो अवसाद में जा सकता है।
- मैं उसे नकल न करने दूँ।
- मैं उसे नकल करने के लिए गणित के अध्यापक से कहूँ ताकि वह नकल कर सके।
- सभी विद्यार्थियों की तरह उसे भी [illegible] विद्यार्थी समझूँ, न कि अपना बेटा।

(2) प्रथम विकल्प में यदि मैं अपने बेटे को नकल करने देता हूँ तो शायद मेरा बेटा गणित में पास हो जाए और वह अन्य विषयों में भी [illegible] है तब वह 12वीं की परीक्षा में पास हो जाएगा जिससे वह आगे की अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है।

वह परीक्षा में सफल होने पर अवसाद से भी मुक्त रहेगा। क्योंकि मनुष्य के लिए अवसाद एक अत्यधिक घातक मानसिक अवस्था है। जिससे शायद वो बच जाए।

और परीक्षा में असफल होने से मेरी प्रतिष्ठा पर भी आँच आएगी। क्योंकि मैं इस विद्यालय का प्रधानाचार्य हूँ और मेरा ही बेटा यदि परीक्षा में फेल हो जाए तो विद्यालय के अन्य अध्यापकों, छात्रों और समाज में बदनामी होगी कि यदि मैं अपने ही बेटे को अच्छे से नहीं पढ़ा सका तो आगे के और विद्यार्थी कैसे पढ़ेंगे।

इस विकल्प को चुनने से पत्नी की चिंता भी दूर हो जाएगी। क्योंकि वह माँ है और वह अपने बेटे के भविष्य के लिए चिंतित है क्योंकि उसे चिंता है कि यदि वह असफल रहा तो वह अवसाद ग्रस्त हो जाएगा। और उसका भविष्य व कैरियर खराब हो जाएगा।

- अब यदि मैं उसे नकल न करने दूँ। तो इससे मैं उसे अच्छे से समझा सकता हूँ कि वह अपनी मेहनत से ईमानदार कोशिश करे। बिना [illegible] पेपर दे [illegible] जैसा भी रिजल्ट आता है और उसे समझाऊँगा कि एक परीक्षा में असफल हो जाने से जिंदगी में असफल नहीं होते। केवल एक छोटी एकेडमिक परीक्षा हमारा भविष्य नहीं तय करती।

परीक्षा को सकारात्मक रूप से ले। फिर भी यदि असफल होता है तो दोबारा ज्यादा मेहनत करके फिर से परीक्षा में बैठ सकता है और सफल हो सकता है।

मेरा नकल न करने देने का निर्णय नैतिक रूप से सही होगा। क्यों कि उसमें व्यक्तिगत हित की तुलना में सार्वजनिक हित को अधिक महत्व दिया गया है। उससे शाला के शेष छात्रों में भी नकल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति रहेगी।

- यदि मैं अपनी शाला के गणित के अध्यापक से ऐसे नकल कराने के लिए कहता हूं तो इससे हो सकता है कि मेरा बेटा 12वीं परीक्षा उत्तीर्ण तो कर ले, लेकिन मेरी प्रतिष्ठा उसके परीक्षा में फेल होने से ज्यादा खराब होगी, क्यों कि उससे पूरे स्कूल में यह संदेश जायेगा कि मैंने अपने बेटे की सफलता के लिए पिता के फर्ज को प्रधानाचार्य के फर्ज से ज्यादा महत्व दिया। नकल करना व कराना दोनो ही अनैतिक है।

- जब मैं विद्यालय में रहूँ तो यह भूल जाऊँ कि वह मेरा बेटा है। केवल अपने प्रधानाचार्य का कर्तव्य निभाऊँ। क्यों कि विद्यालय में मेरा प्रधानाचार्य का पद ही महत्वपूर्ण है।

जिस तरह समस्त विद्यार्थियों के लिए नकल न करने का प्रबन्ध किया जायेगा, उसके लिए भी वैसा ही प्रबन्ध रहेगा।

इस विकल्प को चुनने से मैं अपनी नजरों में आत्म संतुष्ट रहूँगा। उससे कोई नैतिक दुविधा भी नहीं होगी। न ही मेरे मूल्यों के मध्य अंतर्द्वन्द रहेगा।

(हाशियें के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करें)

प्रश्न संख्या 4 2

द्वितीय चरण

1. नैतिक मुद्दे :-

→ गरीबी का नैतिक मुद्दा रहेगा।

→ भिक्षावृत्ति के पीछे पूरा तंत्र काम करता है।

→ भिक्षावृत्ति मानव तस्करी, बाल अपहरण, को बढ़ावा देती है।

→ मानवाधिकार का हनन

→ बाल अधिकारों का हनन

→ बाल शिक्षा से वंचित

→ बच्चों को अपाहिज बना दिया जाता है क्यों कि अपाहिजों को ज्यादा भीख मिलती है, कि धारणा काम करती है।

(हाशियें के बाहर कुछ भी न लिखे, न ही कोई पहचान चिन्ह अंकित करें)

2. भिक्षावृत्ति गरीबी का सामाजिक दोष भी है क्यों कि यदि व्यक्ति मजबूरी में पैसों की कमी के कारण भीख मांग रहा है तब वह गरीबी में जी रहा है।

» अधिकांश मामलों में बड़े-बड़े शहरों में भिक्षावृत्ति के पीछे संगठित पूरा तंत्र काम कर रहा होता है।

» चूंकि बच्चों को व्यक्ति दयाभाव के कारण भीख ज्यादा मिलती है इससे बाल अपहरण, मानव तस्करी की घटनाएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

» ऐसे बच्चे और व्यय सम्मानपूर्वक जिंदगी नहीं जी पाते।

» बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

» बच्चों को विकलांग बना दिया जाता है क्यों कि माफिया को पता है कि यदि बच्चा विकलांग है तो वह सही बच्चे की तुलना में ज्यादा भीख लेकर आता है।

गौतम आईएएस एकेडमी | Meet us@Near Samadhan Hospital, Wright Town, Jabalpur (M.P.), Call : 0761 - 4031947, 9300030305

गौतम आईएएस एकेडमी | Meet us@Near Samadhan Hospital, Wright Town, Jabalpur (M.P.), Call : 0761 - 4031947, 9300030305